मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

# बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 55 अंक 11 | प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
नवम्बर 2019 | बहाई वर्ष : 176

### विश्व न्याय मन्दिर

एक बात जो सबको अवश्य ही स्वीकार करनी चाहिये वह है–आध्यात्मिक सम्पोषण से वंचित निराशा के घोर अंधकार में डूब रही मानवजाति की सबसे बड़ी जरूरत और प्रभुधर्म का संदेश देने की हमारी जिम्मेदारी की सबसे बड़ी आवश्यकता, जिस जिम्मेदारी को 'सर्वमहान नाम' के समुदाय के सदस्य के रूप में हममें से प्रत्येक को सौंपा गया है।

*–रिज़वान 2007*

## बाब और बहाउल्लाह के जन्मोत्सवों की झलक

पूरे भारत वर्ष में बाब का द्विशताब्दी जन्मोत्सव और बहाउल्लाह का दो सौ दो वाँ जन्मोत्सव बहुत ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ आध्यात्मिक माहौल में मनाया गया।

• महाराष्ट्र में विभिन्न स्थानों–कल्याण, भिवंडी, उल्हासनगर, बदलापुर, मुंब्रा, ठाणे, कोंगाँव और गोवंडी के सभी क्षेत्रों में बड़े हर्षोल्लास के साथ मित्रों ने एक साथ मिलकर बाब के जन्मोत्सव के द्विशताब्दी समारोह को मनाया।

भिवंडी में मित्रगण एकत्रित हुए और प्रसन्नता के साथ इस उत्सव को मनाया। कार्यक्रम में बाब और बहाउल्लाह के जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत की गईं। सार्वभौमिक शिक्षा पर चर्चा की गई। साथ ही, चार मूल गतिविधियों के महत्व के बारे में भी बताया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान नृत्य और कला का भी प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 100 से अधिक मित्रों ने भाग लिया।

• कल्याण में कार्यक्रम की शुरुआत बहाई कक्षाओं के बच्चों और युवाओं द्वारा बहाई प्रार्थना और पवित्र लेखन से हुई। वसुधैव कुटुंबकम पर एक चर्चा की गई, बाब के जीवन के बारे में बताया गया और बहाई धर्म का परिचय दिया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान नृत्य, भक्ति गीत प्रस्तुत किए गए। बाब के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता को



बाब के द्विशताब्दी जन्मोत्सव में भाग लेने वाले मित्रगण

मित्रों के बीच रुचि बनाए रखने के लिए रखा गया। बहाई कक्षा के बच्चों और किशोरों को पुरस्कार दिए गए। इन्हीं दिनों दीपावली का भी समारोह था उसके बावजूद लगभग 100 मित्रों ने भाग लिया। इन कार्यक्रम से पहले बहाई मित्रों ने कई प्रतिष्ठित लोगों और अन्य आम लोगों के साथ द्विशताब्दी

*शेष पृष्ठ 3 पर*

### इस अंक में



## पटना में बाढ़ की विभीषिका एवं बाढ़ पीड़ितों के बीच राहत सामग्री का वितरण

बिहार की राजधानी पटना सहित 27 जिलों में 27 से 30 सितम्बर, 2019 को हुई अतिवृष्टि के कारण जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया। ख़ासकर पटना में हुई अतिवृष्टि ने बाढ़ का विकराल रूप धारण कर लिया और सचमुच ऐसा लगा कि जिंदगी ठहर–सी गई है अन्य मूलभूत सामग्रियों के अभाव में तरस रहे थे। इस विषम परिस्थिति में भी परिषद कार्यालय कभी बन्द नहीं हुआ और बहाई मित्रगण लगातार एक–दूसरे के सम्पर्क में रहे।

पटना स्थित बहाई भवन के निचले तल्ले में लगभग 3 फीट



बाढ़ के पानी में फंसे लोगों तक खाने–पीने की वस्तुएँ और आवश्यक सामग्री पहुँचाते हुए बहाई मित्रगण

सबसे भयावह स्थिति पटना की ही थी जहाँ लोग पानी के मध्य घिरे होने के बावजूद भी पेयजल के लिए तरस रहे थे।

ज्ञातव्य हो कि पटना के प्रमुख रियायशी इलाके–राजेन्द्र नगर, कंकड़बाग, बहादुरपुर, लोहानीपुर, नाला रोड, हनुमान नगर, पाटलीपुत्र, पटेल नगर, बोरिंग रोड इत्यादि झील में तब्दील हो चुकी थी। यहाँ की मुख्य सड़कों पर 5 से 6 फीट तक जलजमाव था व लोग इस दौरान अपने–अपने घरों में फंसे हुए थे और बिजली–पानी सहित तथा सामने सड़क पर लगभग 5 फीट पानी था, जिसके कारण बहाई भवन में रखा कम्प्यूटर, किताबें तथा अन्य आवश्यक कागजात एवं सामग्री पानी में डूब गये।

इसी प्रकार, अलौली, खगड़िया, शाहपुर पटोरी, बिहारशरीफ़, फतुहा एवं पुनपुन आदि क्लस्टरों से प्राप्त जानकारी के अनुसार परिषद को ज्ञात हुआ कि कोठिया, हिरानन्दपुर, सम्पतचक आदि समुदाय के कुछ मित्रों के घर में पानी घुस गया था।

*शेष पृष्ठ 4 पर*

## आवश्यक सूचना

राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा आप सभी को सूचित करती है कि श्री पी. के. प्रेमराजन ने अस्वस्थ होने के कारण राष्ट्रीय सभा से अनुरोध किया था कि वे सभा के सदस्य के रूप में अपनी सेवायें देने में असमर्थ हैं। राष्ट्रीय सभा ने उनके इस अनुरोध को स्वीकारते हुए उप–चुनाव कराया। उप–चुनाव में श्री प्रेमराजन के स्थान पर प्रोफेसर अनिल सारवाल को वर्ष 2019–2020 के लिए राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के सदस्य के रूप में चुन लिया गया है।

राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा श्री पी. के. प्रेमराजन द्वारा दी गईं उनकी सेवाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करती है।

## एक प्रेरणात्मक सत्य घटना

प्रिय मित्रों, हम जो भी कार्य अपनी पूरी ईमानदारी और सच्चे दिल से करना चाहते हैं, उस कार्य को पूर्ण करने के लिए ईश्वर भी किसी न किसी रूप में हमारी मदद करने को आगे आता है। जो घटना आज हम आपके साथ साझा कर रहे हैं, उसे पढ़ने के बाद आप भी इस बात से सहमत होंगे।

एक दिन की बात है, एक बहाई मित्र अपने कार्यालय के काम से किसी दूसरे शहर गया। पूरा दिन वह अपने कार्य को सम्पन्न करने के लिए लगा रहा। शाम को अपना कार्य समाप्त करने के बाद वह खरीदारी करने के लिए निकला। जब वह दुकानदार को पैसे दे रहा था तो उसने देखा कि उसके पर्स में दो सौ रुपये का एक नया कड़क नोट था, उसी क्षण उसने अपने मन में यह निश्चय कर लिया कि वह इसको खर्च नहीं करेगा, बल्कि इसे पवित्र भूमि में बनाई जाने वाली अब्दुल–बहा की समाधि के लिए कोष में दान देगा। इस नेकनीयती के साथ उसने उस नोट को वापस अपने पर्स में रख दिया।

रेलगाड़ी से वापस अपने घर जाने के लिए वह स्टेशन पर पहुँचा। रात को वह रेलगाड़ी में बैठा और सोने की तैयारी करने लगा, उसने अपना पर्स जेब से निकालकर तकिये के नीचे रख दिया और निश्चिंत होकर सो गया। अगली सुबह रेलगाड़ी जब अपने गंतव्य पर पहुंची, तब वह नींद से जागा, अपना सामान उठाकर गाड़ी से नीचे उतरा और अपने घर की ओर चल दिया, लेकिन वह इस बात से अवगत नहीं था कि उसका पर्स उसके पास नहीं है, वह तो रेलगाड़ी में ही तकिये के नीचे रखा रह गया है। जब वह स्टेशन से अपने घर पहुँचा तब उसे ज्ञात हुआ कि उसका पर्स तो रेलगाड़ी में ही छूट गया है। उसने अपने मन में विचारा कि अब तो उसका पर्स उसे वापस मिलने से रहा, लेकिन उसे अपने पर्स खोने से ज्यादा इस बात का दुःख था कि जो दो सौ रुपये का नया नोट उसने अब्दुल–बहा की समाधि के लिए दान देने हेतु रखा था, उसने उसे भी खो दिया।

अभी वह यह सब अपने मन में सोच ही रहा था कि तभी उसके मोबाइल पर एक व्यक्ति का फोन आया, जिसने बताया कि उसके पास एक पर्स है जो रेलगाड़ी में छूट गया था। दोनों के मध्य बातचीत हुई और दोनों ने मिलने के लिए एक स्थान निश्चित किया। बहाई मित्र उस जगह पर पहुँचा, उस व्यक्ति से मिला उसने अपना खोया हुआ पर्स वापस लिया और उस सज्जन व्यक्ति का आभार व्यक्त करते हुए पूछा कि आपको मेरा नम्बर कैसे प्राप्त हुआ, तो उस व्यक्ति ने बताया कि जब उसने उसका पर्स खोल कर देखा तो उसमें उसका बहाई पहचानपत्र दिखा, जिस पर उसका फोन नम्बर लिखा हुआ था।

मित्रों, पढ़ने में तो यह एक साधारण–सी ही घटना लगती है, परन्तु यदि इसकी गहराई देखो तो ज्ञात होगा कि आज के समय में किसी का भी एक बार खोया हुआ सामान मिलना बहुत ही कठिन होता है, किन्तु इस बहाई मित्र ने एक नेक कार्य के लिए अपने रुपये को दान देने का निश्चय किया था, शायद इसलिए उस परम करूणामय ईश्वर ने ही उस भद्र व्यक्ति को वहाँ पर भेजा, जिसने उस पर्स को लौटाया ताकि बहाई मित्र का कोई नुकसान न हो और उसका प्रण भी पूरा हो जाये।

## निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र में प्रकाशित कर सकें।

*धन्यवाद !*

## त्रिपुरा में पौधारोपण का कार्यक्रम

त्रिपुरा में बाब के जन्म शताब्दी के उत्सव के एक भाग के रूप में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। राज्य बहाई परिषद ने योजना बनाने और इसे राज्य स्तर पर क्रियान्वित करने के लिए तीन सदस्यों को मिलाकर एक कार्य दल नियुक्त किया। कार्य इस कार्य के लिए अन्य बहाई संस्थानों के अलावा बच्चों, किशोरों और अभिभावकों की भारी प्रतिक्रिया मिली।

बाब की याद में वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेने के दौरान मित्रों के बीच स्वामित्व और आनंद की एक बड़ी भावना प्रकट हुई है।



पौधारोपण कार्यक्रम के दौरान स्कूल के बच्चे पौधे लगाते हुए

दल ने 4 अगस्त, 2019 को राज्य के सभी बहाई समुदायों को वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अपील करने का निर्णय लिया। उन्होंने आस–पास के वन कार्यालयों से पौधे एकत्र करने के लिए दिशानिर्देश दिए और पेड़ लगाने के लिए एक स्थान का चयन करने का सुझाव दिया। उन्होंने समुदायों को पौधों की सुरक्षा के लिए उचित देखभाल करने के लिए भी कहा। मित्रों ने पेड़ों की रक्षा करने के बारे में अच्छी तरह से सोचा था, यही कारण है कि उनके द्वारा लगाए गए पौधों की संख्या कार्यक्रम में भाग लेने वाले लोगों की संख्या से भी कम थी। हम मानते हैं कि बहाउल्लाह के अग्रदूत बाब के द्विशताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर दुनिया, बहाई मित्रों के रचनात्मक प्रयासों के साथ एक बेहतर स्थान पर होगी।

## चंडीगढ़ में बाब के जीवन पर कार्यक्रम

चंडीगढ़ के बहाई भवन में बाब के जीवन पर क्षेत्रीय सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में मध्य प्रदेश, त्रिपुरा, सिक्किम, उत्तर प्रदेश, कोलकाता, जम्मू, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और हरियाणा के लगभग 80 प्रतिभागी उपस्थित रहे। डॉ. आर एस यादव ने इस सभा का संचालन किया। उन्होंने अपनी बातों और अनेक कहानियों के माध्यम से प्रेरित किया। उन्होंने सभी धर्मों के पवित्र ग्रंथों का माध्यम से जो कुछ भी प्राप्त होगा, उसका उपयोग सेवा में किया जाएगा। सच्ची भक्ति और सेवा के माध्यम से हमें दिव्य गुणों को विकसित करने में सहायता मिलेगी। सभा का मुख्य उद्देश्य अनुयायियों को बाब के इतिहास के माध्यम से जोड़ना और उन्हें उनके संबंधित स्थानों में बाब के द्विशताब्दी समारोह की योजना के लिए तैयार करना था। कार्यक्रम बाब के जीवन और धरती पर उनके मिशन पर केन्द्रित



चंडीगढ़ में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

अध्ययन करने और उस ज्ञान को अद्यतन करने के लिए प्रोत्साहित किया, जो प्रभुधर्म को सिखाने में सबसे मजबूत साधन है जो मानवता के लिए महत्वपूर्ण है। यह आशा की जाती है कि इन कक्षाओं के था ताकि मानवजाति को इस धरती पर आने के लिए तैयार किया जा सके और इस धरती पर सभी पवित्र ग्रंथों में भविष्यवाणी की गई थी। कार्यक्रम पूरी तरह से आत्मनिर्भर था।

# बाब और बहाउल्लाह के जन्मोत्सवों की झलक

*पृष्ठ 1 का शेष*

समारोह को साझा किया।

• कोल्हापुर बहाई समुदाय ने कागल और कोल्हापुर में दो स्थानों पर बाब के जन्मोत्सव की द्विशताब्दी के समारोह का आयोजन किया। समारोह से पहले इन दोनों स्थानों के परिवारों के साथ मुलाकात की गई और बाब के जीवन के बारे में उनको बताया। बावदा की एक कॉलोनी में परिवारों को उत्सव में शामिल करने के लिए द्विशताब्दी पर विश्व न्याय मन्दिर की ओर से जारी की गई फिल्म भी दिखाई गई। इस कार्य के लिए बहाई मित्रों ने अथक प्रयास किये।



कोल्हापुर में आयोजित कार्यक्रम में नृत्य प्रस्तुत करते हुए युवतियाँ

कागल में उत्सव 29 अक्टूबर को आयोजित किया गया, जिसमें 40 मित्रों ने भाग लिया। गाँव के चौक पर पोस्टर लगाए गए, माइक पर घोषणाएँ की गईं और समारोह के दिन बाब के लेखन को पूरे गाँव में सुना गया। कोल्हापुर में समारोह 30 अक्टूबर 2019 को हुआ और इसमें किशोर, बच्चों और बहाई मित्रों के 100 अभिभावकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि वायुसेना के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री नितिन पाटिल थे। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना, दीप प्रज्वलित करने और बाब के लेखों से हुई। इसके बाद फिल्म 'दिव्य प्रकाश का अरुणोदय' दिखाई गई। बाब के बचपन और युवावस्था की कहानियां भी साझा की गईं। अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।

• झारखण्ड के विभिन्न क्लस्टरों के विभिन्न समुदायों में, गली–मोहल्लों एवं परिवारों के स्तर पर बाब के 200वें एवं युगावतार बहाउल्लाह के 202वें जन्मोत्सव का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। जन्मोत्सव के अवसर पर सभी वर्गों एवं उम्र के मित्रों ने भाग लिया। अभी तक झारखण्ड के 16 क्लस्टरों के लगभग 40 समुदायों के 70 से अधिक गली एवं मोहल्लों में लगभग 1200 परिवारों के 6000 से अधिक लोगों साथ यह द्विशताब्दी



झारखण्ड के पटमदा समुदाय में आयोजित बाब के द्विशताब्दी जन्मोत्सव में भाग लेने वाले मित्रगण

समारोह मनाया गया। कई स्थानों पर मित्रों ने परिवार एवं समुदाय स्तर पर भक्तिपरक सभाओं का आयोजन किया, तो कहीं पर मित्रों ने टेंट लगाकर कला एवं संस्कृति के माध्यम से जन्मोत्सव मनाया। कहीं पर मित्रों ने स्कूलों में जाकर बच्चों एवं शिक्षको के बीच जन्मोत्सव मनाया और उनके बीच चॉकलेट का वितरण किया। कुछ जगहों पर स्थानीय युवाओं, बच्चे एवं किशोरों ने सफाई अभियान चलाकर द्विशताब्दी का संदेश दिया। कहीं पर मित्रों ने अपने फोन पर द्विशताब्दी पर बनी फिल्म देखी तो कही पर टीवी पर, जिसने उनके



झारखण्ड के बिरसानगर समुदाय में आयोजित बाब के द्विशताब्दी जन्मोत्सव में शामिल मित्रगण

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। कई स्थानों पर मित्रों ने बाब की जीवनी, उनकी लेखनी और उनकी कहानी का स्पष्ट प्रस्तुतिकरण किया। यह एक ऐसा समारोह था जहाँ पर बच्चे, किशोर, युवा, वयस्क, वृद्ध कोई भाषण सुनने नहीं अपितु इस युग के युगलावतारों से और गहनता से जुड़ने और उनके द्विशताब्दी समारोह को यादगार तरीके से मनाने हेतु उपस्थित हुए थे। यह एक ऐसा माहौल था जहाँ पर ईश्वरीय शब्दों के गूंजने से ही आत्मायें स्वयं एकत्रित हो जातीं और अपने को आमंत्रित महसूस करतीं। कार्यक्रमों के अंतर्गत गतिविधियों में शामिल होने वाले बच्चों, किशोरों एवं युवाओं द्वारा अपनी सीखों को संगीत, नृत्य एवं नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया, जिसने प्रेम, एकता और भाईचारे का संदेश दिया। कई अभिभावकों ने अपना अनुभव अन्य उपस्थित मित्रों के साथ साझा किये कि कैसे उनके बच्चे बहाई शिक्षाओं के संपर्क में आकर आध्यात्मिक रूप से परिवर्तित हुए। हर्ष की बात यह है कि विभिन्न जगहों पर मनाये गये उत्सवों में जिज्ञासु मित्रों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। साथ



झारखण्ड में उत्सव हेतु स्वच्छता अभियान में भाग लेने वाले प्रतिभागी गांव की सफाई करते हुए

ही, कार्यक्रमों को सफल बनाने में भी स्थानीय बहाई मित्रों ने मदद की। बहाई मित्रों ने इस उत्सव को एक अवसर के रूप में देखा जहाँ पर बंद पड़े आत्माओं के कपाट खोले जा सकते हैं और उन्हें युगावतार बहाउल्लाह और बाब का संदेश देकर समाज में व्याप्त विनाशकारी शक्तियों से बचाया जा सकता है।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

# बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के संबंध में बहाउल्लाह का विधान

### बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के विधानों का सिंहावलोकन और इनकी उपयुक्तता

**अंत्येष्टि–क्रिया के लिये तैयारियाँ**
**मृतक की शव–यात्रा**

विश्व न्याय मंदिर सलाह देता है कि मृत्यु का स्थान वह शहर अथवा नगर माना जा सकता है जहाँ अनुयायी की मृत्यु हुई हो और इसलिये नगर की सीमा से अंत्येष्टि–क्रिया के स्थान तक एक घंटे के अंदर की यात्रा होनी चाहिये। फिर भी, इस पर ध्यान दिया जाना चाहिये कि बहाउल्लाह के विधान का भाव यह है कि अंत्येष्टि–क्रिया उसके आस–पास ही सम्पन्न हो जहाँ मृत्यु हुई है।

(विश्व न्याय मंदिर की ओर से एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 20 फरवरी, 1970 को लिखे गये एक पत्र से)

विश्व न्याय मंदिर ने आपका पत्र प्राप्त किया है.... जिसमें आपने इस सम्बन्ध में मार्गनिदेश प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की है कि समाधि–स्थल अगर गाँव से एक घंटे से अधिक अवधि की पैदल यात्रा पर हो तो वैसी स्थिति में अंत्येष्टि–क्रिया से सम्बन्धित विधान का अनुपालन कैसे किया जाये।

अगर यातायात के कोई अन्य साधन उपलब्ध न हों, अथवा जैसाकि आपने लिखा है, व्यावहारिक नहीं हो तो ऐसे गाँवों के बहाइयों के लिये दूसरी सम्भावना यह बनती है कि गाँव के करीब ही एक समाधि–स्थल बनाई जाये ताकि गाँव की सीमा से एक घंटे के अंदर वहाँ पहुँचा जा सके। अगर यह समाधान भी सम्भव नहीं है तो अनुयायियों को फिलहाल यह व्यवस्था करनी चाहिये कि वे शव–यात्रा की अवधि कम–से–कम रखें।

(विश्व न्याय मंदिर की ओर से एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 21 सितम्बर 1981 को लिखे गये एक पत्र से)

"किताब–ए–अक़्दस" में इस सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा गया है," मृतक की देह को नगर से एक घंटे की यात्रा से ज्यादा दूर पर ले जाने से तुम्हें मना किया गया है। दीप्त और शांत भाव के साथ उसे किसी निकट स्थल पर ही भूमिगत किया जाये।" शोध प्रभाग ने पवित्र लेखों में ऐसा कोई भी संदर्भ नहीं प्राप्त किया है जिसमें इस विधान के लिये कोई ख़ास कारण दिया गया हो, किन्तु बहाउल्लाह द्वारा इस विधान के दिये जाने पर अगर हम विचार करें तो पायेंगे कि मानवजाति के बीच एकता स्थापित करने और इसे विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों तथा पारम्परिक मान्यताओं से मुक्त करने के अलावा और कोई दूसरा उद्देश्य नहीं है, ऐसी मान्यतायें जो आदमी को एक दूसरे से अलग–थलग कर देती हैं। यह समझा जा सकता है कि एक अत्यंत सम्मानजनक और सरल अंत्येष्टि–क्रिया की सलाह बहाउल्लाह देते हैं। पिछली शताब्दियों में लोगों के बीच यह प्रथा रही है कि मृत शरीर को लम्बी दूर तक ले जाया जाये ताकि उसे किसी धार्मिक स्थल अथवा मृतक के निवास स्थान तक ले जाया जाये। बहाई विधान ऐसी प्रथा का बहिष्कार करते हैं। ये विश्व एकता पर बल देते हैं और मानते हैं कि शरीर की तुलना में आत्मा अधिक महत्वपूर्ण है। मृतक के शरीर को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और बिना देर किये हुये उस स्थान के करीब ही इसे धरती के हवाले कर दिया जाता है जहाँ उसकी मृत्यु हुई है। हम जानते हैं कि आत्मा का अस्तित्व बना रहता है और यह उस उच्च स्थान के लिये प्रयाण कर जाती है जहाँ न कोई स्थान और न ही समय की सीमा रहती है।

(विश्व न्याय मंदिर द्वारा एक अनुयायी को 23 नवम्बर 1993 में लिखे गये एक पत्र से)

क्रमशः

# पटना में बाढ़ की विभीषिका एवं बाढ़ पीड़ितों के बीच राहत सामग्री का वितरण

*पृष्ठ 1 का शेष*

बिहारशरीफ़ के सिपाह सामुदायिक विद्यालय में भी जल–जमाव के कारण शिक्षा कार्य बाधित था। इसके अलावा मुंगेर एवं अलौली में कुछ कच्चे मकान भी बारिश के कारण गिर गये थे, किन्तु, बिहार के ग्रामीण इलाकों में पटना से काफी बेहतर स्थिति थी क्योंकि इन इलाकों में यातायात तथा अन्य संचार साधन सुगमता से उपलब्ध थे।

ज्ञातव्य हो कि बाढ़ की इस द्वारा राजेन्द्र नगर, पटना में जल निकासी के बाद स्वच्छता अभियान चलाया गया।

विदित हो कि पटना एवं फतुहा क्लस्टर के बहाई स्वयंसेवकों द्वारा राजेन्द्र नगर, पटना के बहुधा सभी सड़कों पर एवं गली–मुहल्लों में झाड़ू लगाई गई, कचरा व मलवा साफ किया गया, ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव किया गया तथा स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक किया गया ताकि बाढ़ की त्रासदी



**पटना में बाढ़ के बाद सड़कों को स्वच्छ करते हुए बहाई मित्रगण**

त्रासदी में राज्य बहाई परिषद, बिहार एवं स्थानीय आध्यात्मिक सभा, पटना द्वारा राजेन्द्र नगर एवं बाढ़ के कारण सर्वाधिक नुकसान झेल रहे कंकड़बाग के झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले लोगों के बीच खाने–पीने का सामान और अति आवश्यक सामग्री का वितरण किया गया व बाढ़ प्रभावित लोगों के संरक्षनार्थ प्रार्थनाएं की गईं।

स्थानीय आध्यात्मिक सभा व जलनिकासी के बाद होने वाली महामारी यथा–डायरिया, कोलरा, डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया, टायफाइड इत्यादि जानलेवा बिमारियों को कम किया जा सके।

ज्ञातव्य हो कि बहाईयों द्वारा संचालित इन सेवा–परियोजनाओं को कई निजी संगठनों द्वारा सराहा गया तथा कई दैनिक समाचारपत्रों ने इसे अपने पत्रों में प्रमुखता से स्थान दिया।

## सेवा का अवसर

डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो के लुबुम्बाशी शहर में बहाई सिद्धांतों से प्रेरित एक स्कूल है। इस स्कूल में आस–पास के गांवों के लगभग 700 विद्यार्थी पढ़ते हैं। स्कूल में निदेशक के पद के लिए स्थान रिक्त है, जिसके लिए बेतहर होगा बहाई दंपति जिन्हें शिक्षा का व्यापक अनुभव हो। इस पद के लिए वेतन दिया जायेगा और यह सेवा का अवसर भी होगा। अधिक जानकारी के लिए aziz@gocongo.cd पर सम्पर्क करें।

**कुल पृष्ठ संख्या–4**

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.11. 2019
**Sender's Address:**
**6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg. New Delhi - 110 001 - INDIA**

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)